कक्षा-9

विषय-हिन्दी

रचनात्मक आकलन

गद्य और पद्य की विषय वस्तु, भाषा, शैली में बहुत अंतर है। गद्य साहित्य की विषय वस्तु प्रायः हमारी बोधवृत्ति पर आधारित होती है और काव्य की संवेदनशीलता पर। गद्य मस्तिष्क के तर्क प्रधान चिंतन की उपज है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि गद्य का संसार वास्तविक है किंतु काव्य बहुत कुछ काल्पनिक है। इस प्रकार गद्य और काव्य विषय, भाषा, प्रस्तुतिशिल्प आदि की दृष्टि से अभिव्यक्ति के सर्वथा भिन्न दो रूप है। दोनों दृष्टिकोण एवं प्रयोजन में भी भिन्न होते हैं। अतः विद्यार्थियों में निम्नलिखित कौशल/दक्षता का विकास करने पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

- विषय से संबंधित जानकारी।
- चिंतन, मनन, आत्मविश्लेषण की प्रवृत्ति उत्पन्न करना।
- तार्किक क्षमता एवं भाषायी प्रवाह एवं दक्षता।
- अभिव्यक्ति/प्रस्तुतीकरण(लय, तुक , भाषा)।
- कल्पना की नवीनता, मानवीयता एवं संवेदनशीलता।
- विचारों की सुसंबद्धता।
- सौंदर्य बोध उत्पन्न करना।
- वाचन (आरोह, अवरोह) एवं लेखन कौशल का विकास।
- सत्यनिष्ठा जैसे मूल्यों को विकसित करना।
- अभिनय क्षमता का विकास एवं उपयुक्त संवाद योजना।
- शब्द भंडार एवं अनुप्रयोग।
- चारित्रिक एवं नैतिक गुणों का विकास।

गतिविधियों को पूरे सत्र में कक्षा शिक्षण के साथ जोड़ना

गतिविधियाँ	पाठ
वाद-विवाद/समूह चर्चा, व्याख्यान, संक्षिप्त लेखन, प्रश्नोत्तर विधि, प्रश्नमंच (क्विज़) और प्रतियोगिता, सुन्दर लेखन, सद् विचार, शब्द-अर्थ एवं प्रश्नों के उत्तर श्यामपट्ट पर लिखवाना।	बात, मन्त्र, गुरुनानकदेव गिल्लू, समृति, निष्ठामूर्ति कस्तूरबा, ठेले पर हिमालय, तोता।
सस्वर वाचन, कविता लेखन, कविता वाचन, प्रश्नोत्तर विधि, प्रश्नमंच (क्विज़) और प्रतियोगिता सद् विचार, शब्द-अर्थ एवं प्रश्नों के उत्तर श्यामपट्ट पर लिखवाना। वाद विवाद/समूह चर्चा।	साखी, प्रभुजी तुम चन्दन हम पानी, पदावली, दोहा, प्रेम-माधुरी, पंचवटी, पुनर्मिलन, दान, उन्हें प्रणाम, पथ की पहचान, बादल को घिरते देखा है, अच्छा होता, युगवाणी।
सस्वर वाचन, सुन्दर लेखन, सद् विचार, शब्द-अर्थ एवं प्रश्नों के उत्तर श्यामपट्ट पर लिखवाना, रोल प्ले एवं दृश्यात्मक प्रस्तुतीकरण, भाषण तैयार करना, प्रश्नोत्तर विधि, प्रश्नमंच (क्विज़) और प्रतियोगिता।	वन्दना,सदाचारः, पुरुषोत्तम रामः, सिद्धिमन्त्रः, सुभाषितानि, परमहंसः, रामकृष्णः, कृष्णगोपालनन्दनः।
रोल प्ले एवं दृश्यात्मक प्रस्तुतीकरण, व्याख्यान, संक्षिप्त लेखन, प्रश्नोत्तर विधि, प्रश्नमंच (क्विज़) और प्रतियोगिता।	दीपदान, नये मेहमान, व्यवहार, लक्ष्मी का स्वागत, सीमा रेखा।

शैक्षिक मूल्यांकन

रचनात्मक आकलन

रचनात्मक आकलन के उपकरण और तकनीक	योगात्मक मूल्यांकन
प्रश्नोत्तर विधि वस्तुनिष्ठ सार लघुउत्तर साक्षात्कार समय-सारिणी आकलन पैमाना उपाख्यान विधि परीक्षण प्रश्नमंच(क्विज) और प्रतियोगिता वाद विवाद व्याख्यान विधि समूह चर्चा शैक्षिक भ्रमण सांस्कृतिक कार्यक्रम दृश्यात्मक प्रस्तुतीकरण	वस्तुनिष्ठ प्रश्न लघुत्तरीय प्रश्न दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

रचनात्मक आकलन के बिंदु

1. शुद्ध वाचन शैली 2. शुद्ध लेखन 3. विषय ज्ञान 4. धैर्य पूर्वक सुनना 5. प्रस्तुतीकरण(लय,आरोह,अवरोह) 6. शब्द भंडार	7. मौलिक कल्पना 8. आत्मविश्वास 9. शब्द चयन व सटीक वाक्य रचना 10. भाषा की प्रवाहशीलता एवं क्रमबद्धता

उपरोक्त आकलन बिंदुओं के अतिरिक्त शिक्षक अपने विवेक से अन्य बिंदु निर्धारित कर सकता है।

रचनात्मक आकलन का रिकार्ड रखना-

दिनांक–

गतिविधि का नाम – संक्षिप्त लेखन

क्रमांक	विद्यार्थी का नाम	प्राप्तांक	ग्रेड	टिप्पणी
1	विद्यार्थी –1	10	A1	विचारों की सुसम्बद्धता एवं व्याकरणिक रूप से पूर्णतया शुद्ध
2	विद्यार्थी–2	8	B1	विषय वस्तु में शिथिलता
3	विद्यार्थी–3	8 1/2	A2	आंशिक रूप से व्याकरणिक त्रुटियां
4	विद्यार्थी–4	6	C1	संकल्पनात्मक बोध की कमी

मूल्यांकन की प्रक्रिया में निम्नलिखित बातों को न करने की सावधानी रखने की आवश्यकता है।

1. छात्रों को धीमा, कमजोर, बुद्धिमान आदि श्रेणी में बांटना।
2. उनके बीच तुलना करना।
3. नकारात्मक वक्तव्य देना।

विद्यार्थियों का प्रोत्साहन-

- विद्यार्थियों के प्रोत्साहन एवं व्यक्तित्व विकास हेतु समय-समय पर छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहित किया जाय।
- प्रभावशाली प्रस्तुति को प्रोत्साहन/सराहना किया जाय।
- कमियों के सुधार हेतु सुझाव।
- अच्छी प्रस्तुतियों का विद्यालय मंच पर प्रदर्शन।
- कविता को कक्षा के सूचना पट्ट पर प्रदर्शित किया जाय।
- छात्रों को स्वयं तथा अन्य विद्यार्थियों के मूल्यांकन हेतु प्रेरित किया जाय।
- औसत प्रस्तुतियों को सुझाव देकर प्रोत्साहित किया जाय।